P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनजातीय महिला विकास – एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

अन्जू
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
दी0 द0 उ0 गोरखपुर
विश्वविद्यालय,
गोरखपुर

सारांश

समाज के अस्तित्व के लिये निरन्तर विकास एक आधारभूत आवश्यकता है। जो कि सामाजिक इकाईयों के बीच परस्पर स्पर्धा को जन्म देकर पारम्परिक (सरल) समाज को आधुनिक (जटिल) समाज की ओर ले जाता है। कुछ समाजों में विकास की गति अत्यन्त तीव्र होती है तो कुछ में मंद। देश में जनजातीय समुदायों को राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु अनेकानेक संवैधानिक एवं शासकीय प्रयास किये जा रहे हैं। प्रस्तुत शोध–पंत्र के अन्तर्गत भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर में जनजातीय महिला विकास का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : जनजातीय, भूमण्डलीकरण, पूँजीवाद

प्रस्तावना

भारतीय धरा को परातंत्रता के दंश से मुक्त कराने में भारत माता की संतानों ने प्राणों की आहुती दी है। इनमें भारत के आदितम निवासियों ने अपना पूर्ण योगदान दिया है। आधुनिकतम सभ्यता से दूर घने जंगलों, मरूस्थलों, दुर्गम पर्वतों मे निवास करने वाले इन लोगों को आदिवासियों (जनजातियों) की संज्ञा दी गयी। आधुनिक भारत के संदर्भ में इन आदितम निवासियों को विद्वानों ने विभिन्न नामों से सम्बोधित किया है। जनजातियों को बोरियर एल्विन ने 'आदिमजाति' ठक्कर बापा, रिजले, सेजविक मार्टिन, जयपाल सिंह आदि ने आदिवासी, 1927 में नियुक्त साइमन मीशन ने 'अनुसूचित' शब्द सुझाया, घूरिए ने पिछड़े हिन्दु तथा उन्होंने इनके लिये अनुसूचित जनजातियां नाम प्रस्तावित किया। जो कि भारतीय संविधान में अनुच्छेद 342 के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है।[1]

स्वतंत्र भारत में भूमण्डलीकरण एवं नवीन सामाजिक परिस्थितियों में 'विकास' की प्रक्रिया एवं अवधारणा के सन्दर्भ में अनेक आयाम उभरे हैं। महिला विकास एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में उभरा है। वर्तमान में विकास की अवधारणा महिला केन्द्रित है और महिला विकास किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास का पयार्य माने जाने लगा है। जहॉ पिछली सदी के छठे एवं सातवें दशकों में विकास की अवधारणा राज्योमुखी एवं पुरूष केन्द्रित थी, नई सहस्त्राब्दी में विकेन्द्रीकरण, महिला– केन्द्रित विकास पर बल दिया जाने लगा है। महिला विकास एक द्वि–मार्गीय अवधारणा है इसके आरम्भिक संकेत उन्नीसवी शताब्दी के दौरान बीसवी शताब्दी के पूर्वाद्ध के अनेक सिद्धान्तों में मिलते हैं। काम्ट ने सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि ज्ञान विज्ञान की उन्नति के फलस्वरूप हमारा सामाजिक संगठन सैन्य समाज से औद्योगिक समाज की ओर अग्रसर होता है। हेनरी मेन ने सामाजिक प्रगति की बात की।

टॉनीज ने यह सिद्धान्त दिया कि मानव समाज संगठनबद्ध समाज से संघ समाज की ओर अग्रसर होता है। दुर्खीम की मान्यता है कि मानव समाज यांत्रिक एकता से सामूहिक एकता की ओर अग्रसर होता है।

समाज एवं मनोविज्ञान का सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से महिला व्यवहार से जुड़ा है। समाज में परिवार को प्राथमिक पाठशाला माना गया है और उसमे महिला की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। महिला व्यवहार का अध्ययन मनोविज्ञान का प्रमुख आयाम रहा है जनजातीय महिलाओं को समसामयिक सामाजिक कुप्रथाओं से मुक्त करने के लिये आवश्यक है कि महिलाओं में विवेकजन्यता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, धर्मनिरपेक्षता एवं आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न की जाय तभी वे सामन्ती एवं रूढ़िवादी शोषण का सशक्त विरोध कर सकेगी।[2]

भूमण्डलीकरण एवं नवीन सामाजिक परिस्थितियों में समाज सुधार आन्दोलन ने कानूनी एवं सामाजिक असमानता तथा अन्याय के विधिक प्रकारों को समाप्त करने का प्रयास किया। ब्रिटिश आगमन से पूर्व सामन्ती काल की

आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में जनजातीय महिला की स्थिति निम्न थी। समाज में व्यक्ति के स्थान का निर्धारण जन्म के आधार पर होता था। महिला की अयोग्यता यही थी कि उसने महिला के रूप में जन्म लिया। जनजातीय महिला को इस जन्म आधारित अयोग्यता से मुक्त कर स्वतंत्रता एवं समानता का वातावरण उपलब्ध कराने की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल है। रूढ़िवादी एवं पुरातन सामाजिक भारतीय विचार इस नवीन परिवर्तन का विरोधी है। भूमण्डलीकरण का स्वरूप एवं संरचना निश्चित रूप से जनजातीय महिला सदस्यों की स्थिति को प्रभावित करती हैं। अतः इस विषय पर महिलाओं की प्रतिक्रिया का विशेष महत्व है। धर्म भारतीय समाज की परम्परा रही है सामान्यतः यह माना गया है कि धर्म का स्पष्ट सम्बन्ध नैतिकता से है। जो व्यक्ति धार्मिक नियमों में विश्वास नही करता है, उसकी नैतिकता एवं मानवता को भी संदेहास्पद माना गया है।[3]

भूमण्डलीकरण से औद्योगिकरण, शहरीकरण, एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने जनजातीय महिला के परम्परागत मूल्यों एवं संस्कारों के समक्ष चुनौती प्रस्तुत की है। इस नवीन प्रक्रिया ने जाति, धर्म, भाषा क्षेत्र के बंधनों को तोड़कर अन्तर व्यक्ति सम्बन्धों को वैचारिक आधार प्रदान किया। शिक्षित युवा, परिवार एवं समाज की कुप्रथाओं का सशक्त विरोध करने में सक्षम है। नई पीढ़ी के आधुनिक एवं प्रगतिशील विचारों ने पुरानी जनजातीय पीढ़ी को विवश कर दिया है कि वे स्थापित सामाजिक मूल्यों, परम्पराओं एवं मान्यताओं का पुनः परीक्षण करें।[4]

भारत विकासशील राष्ट्र है, राजनीतिक दृष्टि से जनतांत्रिक संविधान एवं व्यवस्था पूर्ण समानता एवं स्वतंत्रता की समर्थक है आर्थिक दृष्टि से पूँजीवादी व्यवस्था के उच्च औद्योगिकरण का समर्थन किया गया, किन्तु समाजीकरण की प्रक्रियाओं की गति राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रिया से धीमी है। जनजातियों में आज भी परम्परागत सामाजिक मूल्य सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित करते है। सामन्ती संस्कार आधुनिक विचारों एवं नवीनता के प्रति सशक्ति है। स्थापित सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्य अर्थात विवाह का आधार धर्म एवं जाति, दहेज, विधवा के पुनर्विवाह का विरोध आदि पारिवारिक परम्परा के द्योतक है। विवाह समाज की अनिवार्यता है समस्या नहीं किन्तु भूमण्डलीकरण का विषम परिस्थितियों ने इस अनिवार्यता को जनजातीय परिवेंश में भी समस्या का रूप दे दिया है। महिला को लाचार, दुर्बल एवं अधीन बना दिया गया है। महिला की पराधीनता स्वयं अपने लिये ही नही अपितु पुरूष वर्ग के लिये और इस नाते सम्पूर्ण समाज के लिये भी हानिप्रद है महिला पतन के कारण आंशिक रूप से सामाजिक एवं धार्मिक कारण हो सकते है। किन्तु आर्थिक कारणों को नकारा नही जा सकता।

देश का आर्थिक विकास महिला की स्थिति की अप्रभावित नही छोड़ सकता। निम्न जातियों में महिलाएं समान अधिकारों एवं स्वतंत्रता का उपभोग करती है क्योंकि इनसे पुरूष एवं महिला में कार्य विभाजन नही होता, किन्तु सामन्ती समाज में महिला एवं पुरूष के कार्यों का स्पष्ट विभाजन होता है। महिला का कार्य घर प्रबंध कर पति को प्रसन्न रखने तक ही सीमित होता है। आर्थिक दृष्टि से पर–निर्भर महिलाओं को विवशता के साथ जीवन यापन करना पड़ता है।[5]

भूमण्डलीकरण से परिस्थितियों में पुनः परिवर्तन हो रहा है, महिला पुनः सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर रही है। वर्तमान युग के आर्थिक दबावों के कारण परिवार का सफल संचालन मात्र पुरूष की आय से संभव नही है। ऐसी स्थिति में मध्यम वर्ग की महिला रोजगार के क्षेत्र में सक्रिय हो रही है। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक एवं आर्थिक वैज्ञानिकों के अनुसार विकासशील राष्ट्रों के विकास को गति देने के लिए महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है। जनसंख्या के आधे हिस्से को सार्वजनिक एवं राष्ट्रीय जीवनधारा से अलग करके सम्पूर्ण विकास की कल्पना निरर्थक है। आर्थिक दबावों के परिणम स्वरूप जनजातीय महिला वर्ग का दृष्टिकोण रोजगारोन्मुख हो रहा है लेकिन आधुनिक युग में जब सर्वत्र बेरोजगारी की समस्या विकट है तो ऐसे स्थिति में महिलाओं द्वारा उद्देश्य पूर्ण रोजगार से पुरूष वर्ग हेतु रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं।[6]

भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक एवं सार्वजनिक आर्थिक क्षेत्र मे सक्रिय होना भारतीय समाज की ही नही वरन् सम्पूर्ण विश्व की विशेषता है सभी समाजवादी पूँजीवादी देशों में कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत भारत से कही अधिक है किन्तु वहॉ बेरोजगारी की समस्या इतनी विकट नही है इसका कारण भारतीय आर्थिक राजनीतिक संरचना एवं निर्णयों में आधारभूत दोष है। विशेषतः पूँजीवादी समाज में जहॉ पूँजी पर पूँजीवादियों का स्वामित्व है वहॉ श्रमिका का आज भी शोषण हो रहा है। नगरों में अनियोजित औद्योगिकरण एवं नगरीय अनियोजन के आधार पर गंदी बस्तियों का विस्तार, दरिद्रता, व्यापारिक मनोनरंजन, औद्योगिक थकान, शोर, मानसिक चिन्ता, स्त्री पुरूषों में वृहद अनुपातिक भेद आदि समस्याओं का जन्म केवल औद्योगीकरण एवं नगरीय जनसंख्या प्रक्षेपण के आधार पर हुआ। असगंठित क्षेत्र में जानलेवा स्थिति कम वेतन, एवं पोषण के सभी प्रकार की परेशानियों स्त्रियों के हिस्से मे आई है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक समय मे जनजातीय महिला विकास की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाओं के बाउजूद आज भी पूँजीपति वर्ग द्वारा श्रामिक वर्ग का शोषण निरन्तर जारी प्रतीत होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *राम उमा, 'टाइबल आर्ट ऑफ लिविंग– सिविंग एण्ड डान्सिंग' द टाइम्स ऑफ इण्डिया नई दिल्ली, अप्रैल 2009।*
2. *कर्ण महेन्द्र नारायण, ''भारत में सामाजिक परिवर्तन'' एन0 सी0 आर0 टी0 नई दिल्ली, 2003।*
3. *कर्ण महेन्द्र नारायण, भारत में सामाजिक परिवर्तन एन0सी0 आर0 टी0 नई दिल्ली, 2003।*

4. *सेन अमर्त्य 'डेवलपमेन्ट एज फ्रीडम,' रेन्डम हाउस इनकारपोरेशन 2000।*
5. *टाइगर, लिपोनल, ''सेक्स एण्ड पालिटिक्स''।*
6. *डा0 जास्मिन लॉरेन्स– ''महिला श्रमिक सामाजिक स्थिति एवं समस्यायें''।*